माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का उनके संवेगात्मक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन

प्रो0 (डॉ0) पार्थसारथी पाण्डेय
शोध निर्देशक, असिस्टेण्ट प्रोफेसर
शिक्षक–शिक्षा विभाग
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),
प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

नरेन्द्र तिवारी
शोधछात्र (शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक–शिक्षा विभाग
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),
प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

Article Info

Volume 4 Issue 2

Page Number : 129-137

Publication Issue :

March-April-2021

Article History

Accepted : 02 March 2021

Published : 15 March 2021

सारांश– प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का उनके संवेगात्मक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधाान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का जनसंख्या माना गया है। अध्ययन हेतु यादृच्छिक न्यादर्श विधि का चयन किया गया है। शोधकर्त्ता द्वारा जौनपुर जनपद में स्थित 4 माध्यमिक विद्यालयों का चयन कर 200 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा चयन गया है। उपकरण के रूप में व्यक्तित्व को मापने के लिए डॉ0 महेश भार्गव द्वारा निर्मित 'व्यक्तित्व घटक मापनी' तथा संवेगात्मक परिपक्वता को मापने के लिए डॉ0 यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता स्केल का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु एनोवा (प्रसरण) एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष में पाया गया कि उच्च व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों, छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता उच्च तथा निम्न व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों, छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता निम्न पायी गयी। लिंग के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का उनके संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन में पाया गया कि व्यक्तित्व का उनके संवेगात्मक परिपक्वता पर सकारात्मक प्रभाव है।

मुख्य शब्द – माध्यमिक स्तर, छात्र–छात्राएँ, व्यक्तित्व, संवेगात्मक परिपक्वता, प्रभाव।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

प्रस्तावना– मानव विकास की प्रक्रिया में किशोरावस्था अत्यन्त महत्वपूर्ण है, प्रथम यह युवावस्था की ड्योढ़ी है जिसके पास जीवन का सारा भविष्य पाया जाता है। द्वितीय, विकास की चरमावस्था इसे माना जाता है इसीलिए तो इसे 'आंधी व तूफान' की वेगावस्था कहा गया है। तृतीय शिक्षा के विस्तार की दृष्टि से भी यह अवस्था कम महत्वपूर्ण नहीं है माध्यमिक विद्यालयों में तथा विश्वविद्यालयों में इसी अवस्था वाले बालक पढ़ते है और बौद्धिक क्षमता का प्रदर्शन करते है। चतुर्थ, संवेगात्मक एवं यौनिक दृष्टि से भी यह अवस्था महत्वपूर्ण होती है। पंचम किशोरावस्था में सही निर्माण होता है। किशोरावस्था में बालक तथा बालिकाओं का विकास अत्यन्त तीव्र गति से तथा महत्वपूर्ण ढंग से होता है जिससे व्यक्ति की प्रजनन क्षमता का विकास होता है इस अवस्था के दौरान बालक एवं बालिकाओं में अमूर्त तथ्यों के सम्बन्ध में तार्किक चिन्तन करने की योग्यता विकसित होती है किशोरावस्था में किशोर एवं किशोरियों में उत्साह, सहानुभूति, सहयोग, सद्भावना आदि गुणों का विकास होने लगता है इस अवस्था में अपराध प्रवृत्ति की ओर झुकाव होता है।

संवेग व्यक्ति के आवेश को प्रदर्शित करते है। भय, क्रोध, घृणा, वात्सल्य, करुणा, आश्चर्य आदि प्रमुख संवेग होते है। संवेग का मानव जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान होता है। संवेग की स्थिति में विचार प्रक्रिया में शिथिलता आ जाती है ये मूलप्रवृत्तियों से सम्बन्धित होते है। किशोरावस्था संवेगात्मक रूप से अस्थिरता की अवस्था है व्यक्ति के शैक्षिक जीवन में उच्च माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक शिक्षा का बड़ा महत्व है। छात्र एवं छात्राओं का व्यक्तित्व का संवेगात्मक परिपक्वता में विशेष प्रभाव पड़ता है।

वर्तमान समय में किशोर–किशोरियों में संवेगात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता का विशेष महत्त्व देखा जा सकता है। विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी उत्तर किशोरावस्था में होते हैं। वर्तमान समय में विद्यार्थियों से सम्बन्धित अनुशासन की समस्या ने एक व्यापक रूप धारण कर लिया है। अतः इन किशोरों को शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक एवं नैतिक शक्तियों को उचित दिशा देने के लिए तथा उनकी शिक्षा को निर्धारित करने के लिए उनके व्यक्तित्व निर्माण तत्त्वों से सम्बन्धित विषयों पर अध्ययन आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण हैं चूँकि किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन और नाजुक समय है। इस समय किशोर–किशोरियों में शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से क्रान्तिकारी परिवर्तन होते हैं। इसी अवस्था में अच्दा या बुरा देश प्रेमी व देश द्रोही धार्मिक या अधार्मिक, परिश्रमी या अकर्मण्य, सभ्य, शिष्य व सामाजिक या असभ्य, अशिष्ट, असामाजिक आदि बन सकता है। अतः इन किशोर को उचित मार्गदर्शन करना अनिवार्य है। चूँकि यह काल व्यक्तित्व निर्माण का काल है। अतः यह कार्य शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसलिए किशोर के भावी जीवन के निर्माण माता–पिता, अभिभावकों, शिक्षकों तथा अध्ययनकर्ता का उनके लिए उपयुक्त एवं सुनियोजित शिक्षा की व्यवस्था करना परम कर्त्तव्य है। अतः माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व विकास में संवेगात्मक परिपक्वता का विशेष महत्त्व परिलक्षित होता है।

आज के दौर में निःसन्देह साक्षरता तो बढ़ रही है लेकिन अपराध एवं अत्याचार भी घटनें के बजाय बढ़ रहे हैं। हिंसा बढ़ती जा रही है, आतंकवाद उसी का बिगड़ा हुआ रूप है जो पूरे विश्व को आतंकित किये हुए है।

समाज के विकास के लिए यह आवश्यक है कि समाज के सभी सदस्य आपस में सामंजस्य बनाकर कार्य करें और अपनी आने वाली पीढ़ी को भी अपने मूल्यों, संस्कारों आदर्शों का ज्ञान कराते हुए उन्हें भविष्य का एक योग्य नागरिक बनाये। इस उद्देश्य की पूर्ति का एक प्रमुख माध्यम शिक्षा है। शिक्षा के द्वारा ही

समाज का आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास होता हैं एक सुरक्षित और उन्नतशील भविष्य का अगर निर्माण करना है तो सर्वप्रथम शिक्षा पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही एक परिपक्व मन—मस्तिष्क वाले बालक को सही दिशा देते हुए परिपक्व अवस्था में लाया जाता है। यही बालक अपने इन्हीं विचारों मूल्यों आदि के द्वारा आगे अपने भविष्य का निर्माण कर सकता है। उपरोक्त कारणों से इस विषय की आवश्यकता महसूस हुई।

समस्या कथन–

''माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का उनके संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के व्यक्तित्व का उनके संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं के व्यक्तित्व का उनके संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. माध्यमिक विद्यालयों के उच्च, मध्यम एवं निम्न व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के उच्च, मध्यम एवं निम्न व्यक्तित्व वाले छात्रों के संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक विद्यालयों के उच्च, मध्यम एवं निम्न व्यक्तित्व वाले छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध–विधि–

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधाान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या–

जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श–

अध्ययन हेतु यादृच्छिक न्यादर्श विधि का चयन किया गया है। शोधकर्त्ता द्वारा जौनपुर जनपद में स्थित 4 माध्यमिक विद्यालयों का चयन कर 200 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा चयन गया है।

उपकरण–

उपकरण के रूप में व्यक्तित्व को मापने के लिए डॉ0 महेश भार्गव द्वारा निर्मित 'व्यक्तित्व घटक मापनी' तथा संवेगात्मक परिपक्वता को मापने के लिए डॉ0 यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता स्केल का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधियाँ–

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु एनोवा (प्रसरण) एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का उनके संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन–

H_1 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का उनके संवेगात्मक परिपक्वता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका संख्या–1

माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता में अन्तर को दर्शाते प्रसरण विश्लेषण के परिणामों का सारांश

स्रोत	मुक्तांश	वर्ग योग	माध्य वर्ग योग	एफ–अनुपात
समूहों के मध्य	2	5727.73	2863.87	16.02*
समूहों के अन्दर	197	35223.77	178.80	
योग	**199**	**40951.50**	**3042.67**	

*.05 स्तर पर सार्थक

सारणी 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ–अनुपात का मान 16.02 हैं, जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कि ''माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'', .05 स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता के सन्दर्भ में एक दूसरे के भिन्न है।

तालिका सं0 1.1

माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता में अन्तर का क्रान्तिक–अनुपात

क्र. सं.	चर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	σ_D	D	t-मान
1.	उच्च	59	119.69	2.31	3.97	1.71
	मध्यम	77	115.73			
2.	उच्च	59	119.69	2.41	13.18	5.46*
	निम्न	64	106.52			
3.	मध्यम	77	115.73	2.26	9.21	4.07*
	निम्न	64	106.52			

तालिका 1.1 में ***माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता*** का मध्यमान क्रमशः 119.69, 115.73 एवं 106.52 है। प्रत्येक युग्म का क्रान्तिक–अनुपात का मान 0.05 स्तर पर दिये गये मान से अधिक है, जो सार्थक है। तीनों प्रकार के व्यक्तित्व गुणों वाले विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता पर प्राप्त प्रतिदर्श के मध्यमानों में पारस्परिक रूप से सार्थक अन्तर है अर्थात् व्यक्तित्व के सन्दर्भ में तीनों प्रकार के व्यक्तित्व गुणों वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में विभिन्नता है। परिणामतः उच्च एवं मध्यम व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता निम्न व्यक्तित्व गुणों वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

2. माध्यमिक स्तर के छात्रों के व्यक्तित्व का उनके संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन–

H_2 माध्यमिक स्तर के छात्रों के व्यक्तित्व का उनके संवेगात्मक परिपक्वता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका संख्या–2

माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न व्यक्तित्व वाले छात्रों के संवेगात्मक परिपक्वता में अन्तर को दर्शाते प्रसरण विश्लेषण के परिणामों का सारांश

स्रोत	मुक्तांश	वर्ग योग	माध्य वर्ग योग	एफ–अनुपात
समूहों के मध्य	2	4706.50	2353.25	16.14*
समूहों के अन्दर	97	14144.41	145.82	
योग	**99**	**18850.91**	**2499.07**	

*.05 स्तर पर सार्थक

सारणी 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ–अनुपात का मान 16.14 हैं, जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कि ''माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न व्यक्तित्व वाले छात्रों के संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'', .05 स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न व्यक्तित्व वाले छात्रों के संवेगात्मक परिपक्वता के सन्दर्भ में एक दूसरे के भिन्न है।

तालिका सं0 2.1

माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न व्यक्तित्व वाले छात्रों के संवेगात्मक परिपक्वता में अन्तर का क्रान्तिक–अनुपात

क्र. सं.	चर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	σ_D	D	t-मान
1.	उच्च	30	119.93	2.97	5.10	1.72
	मध्यम	37	114.84			
2.	उच्च	30	119.93	3.05	16.72	5.49*
	निम्न	33	103.21			
3.	मध्यम	37	114.84	2.89	11.63	4.02*

	निम्न	33	103.21			

*.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 2.1 में ***माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न व्यक्तित्व वाले छात्रों के संवेगात्मक परिपक्वता*** का मध्यमान क्रमशः 119.93, 114.84 एवं 103.21 है। प्रत्येक युग्म का क्रान्तिक–अनुपात का मान 0.05 स्तर पर दिये गये मान से अधिक है, जो सार्थक है। तीनों प्रकार के व्यक्तित्व गुणों वाले छात्रों के संवेगात्मक परिपक्वता पर प्राप्त प्रतिदर्श के मध्यमानों में पारस्परिक रूप से सार्थक अन्तर है अर्थात् व्यक्तित्व के सन्दर्भ में तीनों प्रकार के व्यक्तित्व गुणों वाले छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में विभिन्नता है। परिणामतः उच्च एवं मध्यम व्यक्तित्व वाले छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता निम्न व्यक्तित्व गुणों वाले छात्रों की अपेक्षा उच्च है।

3. माध्यमिक स्तर के छात्राओं की व्यक्तित्व का उनके संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन–

H_3 माध्यमिक स्तर के छात्राओं की व्यक्तित्व का उनके संवेगात्मक परिपक्वता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका संख्या–3

माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न व्यक्तित्व वाली छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता में अन्तर को दर्शाते प्रसरण विश्लेषण के परिणामों का सारांश

स्रोत	मुक्तांश	वर्ग योग	माध्य वर्ग योग	एफ–अनुपात
समूहों के मध्य	2	1421.27	710.63	3.40*
समूहों के अन्दर	97	20276.04	209.03	
योग	**99**	**21697.31**	**919.67**	

*.05 स्तर पर सार्थक

सारणी 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ–अनुपात का मान 3.40 हैं, जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कि ''माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न व्यक्तित्व वाली छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'', .05 स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न व्यक्तित्व वाली छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता के सन्दर्भ में एक दूसरे के भिन्न है।

तालिका सं0 3.1

माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न व्यक्तित्व वाली छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता में अन्तर का क्रान्तिक–अनुपात

क्र. सं.	चर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	σ_D	D	t-मान
1.	उच्च	29	119.45	3.53	2.90	0.82
	मध्यम	40	116.55			
2.	उच्च	29	119.45	3.74	9.42	2.52

	निम्न	31	110.03			
3.	मध्यम	40	116.55	3.46	6.52	1.88
	निम्न	31	110.03			

*.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 3.1 में ***माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न व्यक्तित्व वाली छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता*** का मध्यमान क्रमशः 119.45, 116.55 एवं 110.03 है। उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व वाली छात्राओं की क्रान्तिक–अनुपात का मान 0.05 स्तर पर दिये गये मान से अधिक है, जो सार्थक है जबकि उच्च एवं मध्यम तथा मध्यम एवं निम्न व्यक्तित्व गुणों वाली छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता पर प्राप्त प्रतिदर्श के मध्यमानों में पारस्परिक रूप से सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् व्यक्तित्व के सन्दर्भ में केवल उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व गुणों वाली छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में विभिन्नता है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- उच्च एवं मध्यम व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता निम्न व्यक्तित्व गुणों वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है निष्कर्षतः माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का उनके संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव है।
- उच्च एवं मध्यम व्यक्तित्व वाले छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता निम्न व्यक्तित्व गुणों वाले छात्रों की अपेक्षा उच्च है निष्कर्षतः माध्यमिक स्तर के छात्रों के व्यक्तित्व का उनके संवेगात्मक परिपक्वता सकारात्मक प्रभाव है।
- व्यक्तित्व के सन्दर्भ में केवल उच्च एवं निम्न व्यक्तित्व गुणों वाली छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में विभिन्नता है निष्कर्षतः माध्यमिक स्तर के छात्राओं की व्यक्तित्व का उनके संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव है।

अतः कहा जा सकता है कि उच्च व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों, छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता उच्च तथा निम्न व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों, छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता निम्न पायी गयी। लिंग के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का उनके संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन में पाया गया कि व्यक्तित्व का उनके संवेगात्मक परिपक्वता पर सकारात्मक प्रभाव है। इस परिणाम की पुष्टि पूर्व अध्ययन में **शाह एवं खान (2016)** ने अध्ययन में पाया कि कामकाजी मताताओं के बच्चों की व्यक्तित्व गुणों एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य महत्वपूर्ण सम्बन्ध पाये गये थे जबकि व्यक्तित्व के अन्य गुणों का संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य आंशिक रूप से सम्बन्ध पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमार, प्रवीण एवं शर्मा, दिनेश (2017). शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में संवेगात्मक बुद्धि की भूमिका : एक अध्ययन, *श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका,* वॉल्यूम–5, इश्शू–4, पृ0 172–175

2. कलैसेवन, एस एवं महेश्वरी, के. (2016). ए स्टडी ऑन इमोशनल मैचुरटी एमंग द पोस्ट ग्रेजुएट स्टूडेन्ट्स, *जर्नल ऑफ ह्युमिनिट्ज एण्ड सोशल साइंस,* वॉल्यूम–21, इश्शू–2, पृ0 32–34
3. गुप्ता, किरन (2019). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में सांवेगिक परिपक्वता, शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा बुद्धि का अध्ययन, शोध–प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज।
4. झाझडिया, राजेन्द्र प्रसाद (2015). माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का उनके व्यक्तित्व एवं समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड साइंस रिसर्च रिव्यू, वॉ0 2, इश्शू–4, पृ0 28–34
5. त्यागी, कृष्णा (2012). स्नातक स्तर के खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी विद्यार्थियों की सामाजिक एवं संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन, एशियन *जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एण्ड टेक्नोलॉजी,* वॉल्यूम–2(2), पृ0 228–231
6. दुहान, कृष्णा एट ऑल (2017). इमोशनल मैचुरिटी ऑफ एडोलसेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर जेण्डर, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइंस एण्ड रिसर्च, वॉ0 7, इश्शू–1, पृ0 61–68
7. शाह, सैय्यद रियाज अहमद एण्ड खान, महमुद अहमद (2016). पर्सनालिटी प्रोफाइल्स एण्ड इमोशनल मैचुरिटी ऑफ चिल्ड्रेन ऑफ वर्किंग मदर्स– ए कोरिलेशन स्टडी, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ कैरेन्ट रिसर्च, वॉ0 8, इश्शू–01, पृ0 25730–25735